

जय करते हो जिनवरा

जय करते हो जिनवरा, दुःख हरते हो देव
पाठ पढ़ पहेलो प्रभु, नमन करू नित्यमेव

पहेले पद अरिहंत को, दूजे सिद्ध भगवंत
त्रीजे श्री आचार्य को, नमु त्याग कर तंत

उपाध्याय ऊपकारिया, ज्ञान के हे भण्डार
नमन करू निर्मल बनू, भवजल तारणहार

साधू सुन्दर लोक में, साधवी हे शणगार
उन सबको स्नेहे करू, वन्दन बारंबार

नमस्कार पद पांच हे, पाप के नाशनहार
जगत के सब कार्य को मंगलमय करनार

ॐ का अनूप रूप

ॐ का अनूप रूप मंत्र नवकार हे
सर्व सिद्धि दायक जपो मंत्र नवकार हे
मंत्र नवकार हे जी मंत्र नवकार हे
सर्व सिद्धि दायक जपो मंत्र नवकार हे

नमो अरिहंताणं पद ये महान हे
सर्व सिद्धियों का मंगल प्रदान हे
मन्त्राधिराज वीतरागता का प्रार हे
सर्व सिद्धि दायक जपो मंत्र नवकार हे

नमो सिद्धाणं अद्वितीय मंत्र हे
सच्ची उपासना से बनता स्वतन्त्र हे
विघ्न और बाधाओ का सही प्रतिकार हे
सर्व सिद्धि दायक जपो मंत्र नवकार हे

नमो आयरियाणं भावना से बोलो
एक एक वाक्य उनका श्रधा से तोलो
विश्व की विभूति जैन शासन श्रृंगार हे
सर्व सिद्धि दायक जपो मंत्र नवकार हे

नमो उवज्जायाणं महामंत्र बोलिए
देवी और देवता के पास मत डोलिए
ज्ञानी और ज्ञान का यही तो सत्यकार हे
सर्व सिद्धि दायक जपो मंत्र नवकार हे

ॐ नमो लोए सत्त्वसाहुणं का ध्यान हो
बुजने न पाए ज्ञान दीप सावधान हो
तन्मय जो धरता ध्यान उसका बेडा पार हे
सर्व सिद्धि दायक जपो मंत्र नवकार हे

जाप ये अखंड महा पञ्च परमेष्ठी का
होता हे कल्याण जाप जपने से सृष्टिका
सदा सत ज्ञान को तो इसीका आधार हे
सर्व सिद्धि दायक जपो मंत्र नवकार हे

ॐ जय अरिहंताणं

ॐ जय अरिहंताणं , स्वामी जय अरिहंताणं
भाव भक्ति से नित प्रति (२), प्रणमु सिद्धाणंॐ जय अरिहंताणं
दर्शन, ज्ञान, अनंता शक्ति के धारी, स्वामी शक्ति के धारी
यथाख्यात है जिसमे, कर्म शत्रु हारीॐ जय अरिहंताणं
हे सर्वज्ञ, सर्वदर्शी , सुख अनंत पाए, स्वामी सुख अनंत पाए
अगुरु, लघुरु , अमूर्ति(२) अव्यय कहलायेॐ जय अरिहंताणं
नमो आयरियाणं, छत्तीस गुण धारक , स्वामी छत्तीस गुण धारक
जैन धर्म के नेता (२), संघ के संचालकॐ जय अरिहंताणं
नमो ऊवज्जायाणं, चरण शरण ज्ञाता, स्वामी चरण शरण ज्ञाता
अंग उपांग पढावत (२) ज्ञान, दान दाताॐ जय अरिहंताणं
नमो लोए सव्व साहुणं , ममता मदहारी, स्वामी ममता मदहारी
सत्य, अहिंसा , अचौये (२), ब्रह्मचर्य धारीॐ जय अरिहंताणं
ब्रह्मचर्य धारी कहे, शुद्ध मन ध्यान धरो स्वामी, शुद्ध मन ध्यान धरो
पावन पञ्च परमेष्ठी (२) प्रत्याख्यान करोॐ जय अरिहंताणं

तेरे ही पावन चरणों में

तेरे ही पावन चरणों में, भगवान् हमारा ध्यान रहे
होठो पे तेरा नाम रहे, जब तक इस तन में प्राण रहे

हम मोह नींद में सोये है, मीठे सपनो में खोये है
सोते, जगते, खाते, पीते(२) प्रभुवर तेरा ही ध्यान रहे
तेरे ही पावन चरणों में.....

जग की माया ने भरमाया, पग पग पर धोखा ही खाया
इस भूलभुलैया में पड़कर (२) हम तेरे से अनजान रहे
तेरे ही पावन चरणों में.....

सुख में हम ने तुम्हे बिसराया, दुःख में न भजन मन को भय
अब ऐसी महेर करो भगवन (२) निशदिन तेरी पहेचान रहे
तेरे ही पावन चरणों में.....

है काम, क्रोध, मद ने घेरा, तृष्णा ने डाला है डेरा
इन से छुटकारा मिल जाये (२) बस एक यही अरमान रहे
तेरे ही पावन चरणों में.....

नयनो में तेरी सूरत हो, दिल दर्पण में प्रभु मूरत हो
मुनि रूप सदा इन सासों में (२) अब तेरा ही अवधान रहे
तेरे ही पावन चरणों में.....

भाव भीनी वंदना भगवान चरणों में चढाये
शुद्ध जोतिर्मय निरामय रूप अपने आप पाए

ज्ञान से निज को निहारे, दृष्टी से निज को निखारे
आचरण की उर्वरा से लक्ष्य तरुवर लहलहाये

सत्य में आस्था अचल हो, चित्त संशय से न चल हो
सिद्ध कर आत्मानुशासन , विजय का संगान गाये

बिंदु भी हम, सिन्धु भी है, भक्त भी भगवान भी है
छिन्न कर सब ग्रंथियों को, सुप्त मानस को जगाये

धर्म है समता हमारा, कर्म समतामय हमारा
सम्ययोगी बन हृदय में, स्तोत्र समता का बहाये

भाव भीनी वंदना भगवान चरणों में चढाये
शुद्ध जोतिर्मय निरामय रूप अपने आप पाए

90. निरखत जिनचन्द्र-वदन

निरखत जिनचन्द्र-वदन, स्वपदसुरुचि आई ॥टेक. ॥
प्रगटी निज आनकी, पिछान ज्ञान भानकी ।
कला उदोत होत काम, जामिनी पलाई ॥१ ॥
शाश्वत आनन्द स्वाद, पायो विनस्यो विषाद ।
आनमें अनिष्ट इष्ट, कल्पना नसाई ॥२ ॥
साधी निज साधकी, समाधि मोह व्याधिकी ।
उपाधिको विराधिकैं, आराधना सुहाई ॥३ ॥
धन दिन छिन आज सुगुनि, चिंतें जिनराज अबै ।
सुधरे सब काज 'दौल', अचल ऋद्धि पाई ॥४ ॥

भावना रथ पर चढ जाऊं....

भावना रथ पर चढ जाऊं;
मध्यलोक तेरी द्वीपों तक दर्शन कर आऊं,
भावना रथ पर चढ जाऊं ॥टेक॥

स्वर्ण थाल में वसु विधि प्रासुक द्रव्य सजा लाऊं;
चार शतक अठ्ठावन जिनगृह, पूजन कर आऊं ॥१॥

पंचमेरु गजदंत वृक्ष वृक्षारों पर जाऊं;
गिरि विजयार्ध कुलाचल वंदूं, नाचूं हर्षाऊं ॥२॥

इष्वाकारों मानुषोत्तर के जिन गृह ध्याऊं;
तंदीश्वर कुंडल व रुचक गिरि, पूजन कर आऊं ॥३॥

जिन पूजन का सर्वोत्तम फल, भेद ज्ञान लाऊं;
शुद्धात्म का अनुभव करके, सिद्ध स्वपद पाऊं ॥४॥

*

भगवान तुम्हारे अन्दर है

भगवान तुम्हारे अन्दर है, कुछ ध्यान लगा कर तो देखो
आनंद तुम्हारे अन्दर है, कुछ ग्यान जगा कर तो देखो

बाहर के प्रभु को पूज रहे, अन्दर के प्रभु को भूल रहे
तब ही तो सत्य नहीं पाया, केवल माया में जूल रहे
परमार्थ तुम्हारे अन्दर है, पुरुषार्थ जगा कर तो देखो..... भगवान

निज आत्म तिजोरी को खोलो, धन, माल सभी मिल जायेगा
संयम की चावी तुम लेलो, वह ताला खुद खुल जायेगा
सर्वस्व तुम्हारे अन्दर है, वैराग्य बढाकर तो देखो.....भगवान

है शांति नहीं गिरी कंदर में, है शांति न मंदिर मस्जिद में
है शांति न धरती अम्बर में, है शांति न घर के अन्दर में
वस शांति हृदय के अन्दर है, कुछ त्याग बढाकर तो देखो...भगवान

बुढिया की चीज गिरी घर में, पर बाहर खोज रही पगली
वह कहेती घर में अँधेरा है, सडको पर जलती है बिजली
आलोक तुम्हारे अन्दर है, कुछ मोह मिटाकर तो देखोभगवान.....

मैं आया प्रभु तेरे द्वार, भव समुद्र पार उतार ,
तुम भविजिव के शरणागार, दया सागर मोहे तार ..

रतनत्रयी के भंडार, तेरे गुण हे अनंत अपार,
शाश्वत सुखो के दातार , आपो सार सार सार

तुम हो दुखियों के आधार, मैं हूँ दुखी निराधार ,
तुमको ध्यावु बारंबार , प्रभु तार मोहे तार

आया सम्मैत शिखर के धाम, किये पार्श्व को जुहार,
गुण मैं गावु बारंबार, तारणहार मोहे तार. ...

देखा जिनजी का दीदार, मेरा सफल हुआ अवतार,
एक तुम ही हो आधार , सेवु बार बार बार

तेरी मूरत पावनकार, निरखे होवे शान्ति अपार ,
दुःख दुर्गति दूर हो जाय, कृपासिन्धु मोहे तार

काम क्रोध को नाशनहार , रोग शोक को दूर करनार ,
मिटे दुरित अपार , दयासागर मोहे तार

तेरे चरणों का आधार, मोहे उतारे भवपार ,
सुनले भक्त की पुकार, प्रभु शिघ्र मोहे तार

गौतम नीति गुण धार, आपो लब्धि अमृत प्यार
मागु सेवा बारंबार , अर्जी धार ऊर धार

सम्मत्शिखर, तारंगाजी, पावापुरी तीरथ सारे हैं
गुरु विद्यासागर के चरणों में चारो धाम हमारे हैं

सब संतो में महा संत दुनिया में सबसे न्यारे हैं
नर नारी बालक बूढ़े सबको ही गुरुवर प्यारे हैं

मुख हो या अज्ञानी, पंडित हो चाहे विद्वान्
सबको एक नजर से देखे, गुरुवर देते हैं वरदान

कौन बिगाड सके उसका , जिसके गुरुवर रखवाले हैं
गुरु विद्यासागर के चरणों में चारो धाम हमारे हैं

सम्मत्शिखर, तारंगाजी, पावापुरी तीरथ सारे हैं
गुरु विद्यासागर के चरणों में चारो धाम हमारे हैं

सदलगा की उस धरती को कोटि कोटि प्रणाम हैं
जिसके कण कण में लिखा है गुरु तुम्हारा नाम रे

गुरुवर माता पिता हमारे , गुरुवर प्राण हमारे हैं
गुरु विद्यासागर के चरणों में चारो धाम हमारे हैं

गुरु चरणों में

कोई शिष्य गुरु चरणों में जब शिर को जुकाता है
परमात्मा खुद आकर आशीष लुटाता है

गुरु चरणों में पूजन का कोई थाल सजाता है
परमात्मा खुद आकर वहा दीप जलाता है

कोई भाव भरे शब्दोंसे जब गुरु को रीजाता है
परमात्मा खुद आकर उसे गले लगाता है

कोई बालक बन चरणों में जब बिनती सुनाता है
परमात्मा खुद आकर गोदी में बिठाता है

गुरु चरणों में अश्रु के कोई अर्घ्य चढ़ाता है
परमात्मा खुद आकर पलको पे बिठाता है

गुरु चरणों में श्रधा से कोई फुल चढ़ाता है
परमात्मा खुद आकर वरदान लुटाता है

गुरुदेव गुनवंता

हृदया दीजो चाँदनी ने नयना दीजो ज्योत
इत्ती बाता नाही दियो तो रह जाऊला ठोठ
मारा गुरुदेव गुनवंता, इत्ती बाता पूरी करो तो छोडू सारी ममता (२)

नौ तत्व रो ज्ञान दीजो, दीजो समजन साची
अंधारो अज्ञान रो हरजो, हरजो समजन काची
मारा गुरुदेव गुनवंता, इत्ती बाता पूरी करो तो छोडू सारी ममता (२)

धरम भरम में कर्म कमायो मर्म न जान्यो काई
शरम शरम में उमर गवाई हाथ न आयो काई
मारा गुरुदेव गुनवंता, इत्ती बाता पूरी करो तो छोडू सारी ममता (२)

किरपा नी बरखा बरसाओ करजो आप समान
शांति धीरज खूब बढाओ दीजो आतम ज्ञान
मारा गुरुदेव गुनवंता, इत्ती बाता पूरी करो तो छोडू सारी ममता (२)

हृदया दीजो चाँदनी ने नयना दीजो ज्योत
इत्ती बाता नाही दियो तो रह जाऊला ठोठ
मारा गुरुदेव गुनवंता, इत्ती बाता पूरी करो तो छोडू सारी ममता (२)

दादा नी सेवा अने पूजा जेना घेर छे
ऐना जीवनमा भाई रोज लीलालहेर छे

पारसनाथ दादानी जेना माथे महेर छे
ऐना जीवनमा भाई रोज लीलालहेर छे
दादा नी सेवा अने पूजा जेना घेर छे
ऐना जीवनमा भाई रोज लीलालहेर छे

दादा नो भरोसो पाको जेने व्यवहारमा
फेरो सुधरे छे भाई एनो संसारमा

श्रद्धा अने भक्तितनो जेने सुमेल छे
ऐना जीवन मा भाई रोज लीलालहेर छे
दादा नी सेवा अने पूजा जेना घेर छे
ऐना जीवनमा भाई रोज लीलालहेर छे

महामंत्र हृदयमा जपे नवकार नो
कर्म्मो खपाय अने थाए आनंदतो

छल ने कपट नी बाजी जेने मन जहेर छे
ऐना जीवनमा भाई रोज लीलालहेर छे
दादा नी सेवा अने पूजा जेना घेर छे
ऐना जीवनमा भाई रोज लीलालहेर छे

पापो कपाय भवना दादाना नामथी
अंतरियु साफ़ रहे दादाना नामथी

भावना मा आवी धरे दादानु ध्यान रे
ऐना जीवनमा भाई रोज लीलालहेर छे
दादा नी सेवा अने पूजा जेना घेर छे
ऐना जीवनमा भाई रोज लीलालहेर छे

प्रभु दर्श कर आज घर जा रहे है
जुका तेरे चरणों में सर जा रहे है

हो ... यहां से कभी दिल न जाने को करता
करे कैसे जाये भी बिना भी न सरता
अश्रु से नयन भर भर आ रहे है ...
प्रभु दर्श कर आज घर जा रहे है

हो....हुई पूजा भक्ति न हुई सेवकाई
न मंदिर में बहुमूल्य वस्तु चढ़ाई
खाली फकत जोड़ कर जा रहे है....
प्रभु दर्श कर आज घर जा रहे है

हो... सुना तुमने तारे है अधम चोर पापी
न धर्मी सही फिर भी तेरे है हम भी
हमें भी तो करना अमर जा रहे है....
प्रभु दर्श कर आज घर जा रहे है

जीवन हे उपहार प्रभु का, इसको रोशन कीजिये,
पहेले अपने अंतर मन को शांति से भर दीजिये

मन ही शिव हे, मन ही शक्ति, मन का ज्ञान जरूरी है
तिन लोक की दिव्य यात्रा, मन के बिना अधूरी है
मन में प्रभु की प्रीत जगाकर, ज्योति से भर दीजिये...जीवन हे...

जीवन की राहों पे चाहे, मिलते हो सबको कांटे
हम वो ऐसी फूल बने जो, औरो को खुशिया बांटे
जीवन है भगवान का मंदिर, बाहों में भर लीजिये ...जीवन हे ...

मन में ज्ञान का दीप जलाकर, भीतर की आंखे खोलो
सांसो की हर तार तार में, प्रभु प्रेम का रस घोलो
हर सूरत में प्रभु की मूरत , उसके दर्शन कीजिये ...जीवन हे ...

मधुर सोचिये, मधुर बोलिये, मधुर मधुर व्यवहार करे
अन्तर मन के हर कोने में, हर पल ही मुस्कान करे
चन्द्र प्रेम की बंसी बजाकर, आनंद से भर लीजिये ...जीवन हे ...

तेरा पल पल है अनमोल, प्रभु का नाम प्रेम से बोल
अब तो मन की आंखे खोल, प्रभु का नाम प्रेम से बोल

तूने कौन सा धन है कमाया, तेरे काम में कितना आया,
अपने पीछे मडके देख तूने क्या खोया क्या पाया
अब तो जीवन में रस घोल, प्रभु का नाम प्रेम से बोल

ढल जाएगी सुन्दर काया, काम न आएगी ये माया
जब तू उसके सामने होगा, पूछेगा तू संग क्या लाया
तेरे निकलेंगे न बोल, प्रभु का नाम प्रेम से बोल

जूठे है ये संगी साथी, जुठे है ये घोड़े हाथी
उसका नाम ही है बस सच्चा, सेवा करले तू दिन राती
उसकी मस्ती में तू डोल, प्रभु का नाम प्रेम से बोल

प्रभु की छबी नयन में धरले, उसके सारे तीरथ करले
तेरे साथ यही आएगा, अपना धरम खजाना भरले
अपने जीवन में रस घोल, प्रभु का नाम प्रेम से बोल

तेरा पल पल है अनमोल, प्रभु का नाम प्रेम से बोल
अब तो मन की आंखे खोल, प्रभु का नाम प्रेम से बोल

महावीर भक्ति केरो, मीठो रंग लागे (२)
मणे खारो खारो संसारी रो संग लागे

थाक भरियो मारा पगमा, नयणो मा निराशा
छोड़ी नहीं रे में तो मुक्ति केरी आशा
महावीर प्रभु री वाणी में, उमंग लागे (२)
मणे खारो खारो संसारी रो संग लागे

महावीर भक्ति केरो, मीठो रंग लागे (२)
मणे खारो खारो संसारी रो संग लागे

सोना री मन इच्छा को णई , चांदी रो णई काम रे
हीरा मोती मणे न भावे, प्यारु महावीर नाम रे
प्रभु भक्ति नो खजानो, मारे संग लागे (२)
मने खारो खारो संसारी रो संग लागे

महावीर भक्ति केरो, मीठो रंग लागे (२)
मणे खारो खारो संसारी रो संग लागे

मारे ऐवी इच्छा को णई, स्वर्ग री शोभा पाऊ
तारा चरणे स्वर्ग हे मारा अठे ही में रह जाऊ
भक्ति रस में डूबन रो, योही रंग लागे (२)
मणे खारो खारो संसारी रो संग लागे

महावीर भक्ति केरो, मीठो रंग लागे (२)
मणे खारो खारो संसारी रो संग लागे

ठाठ बाठ मणे रास न आवे, महल मालिया न भावे
इन्द्रपुरी या जूठी माया अब ना मणे रिझावे
संयम पथ पर जावन रो, मारो मन लागे (२)
मणे खारो खारो संसारी रो संग लागे

महावीर भक्ति केरो, मीठो रंग लागे (२)
मणे खारो खारो संसारी रो संग लागे

मीठे रस से भरी रे, जिनवाणी लागे (२)
मने आतमा की बात घणी प्यारी लागे

आतम हे बस उजलो उजलो, तन लागे रे कालो
शुद्ध आतमा की बात अपने मन में बसालो
मने चेतना की बात घणी प्यारी लागे, मनहारी लागे
मने आतमा की बात घणी प्यारी लागे

देह अचेतन में हूँ चेतन, जिनवाणी बतलाये
जिनवाणी हे सच्ची माता, सच्चा मार्ग दिखाये
अरे मान ले तू चेतन तारो काँई लागे, तारो काँई लागे
मने आतमा की बात घणी प्यारी लागे

नहीं भावे मने लाडू पेड़ा, नहीं भावे मने काजू
मोक्षपुरी में जाऊँगा में बनके दिगम्बर साधू
मने मोक्ष महल को मारग, घणो प्यारो लागे (२)
मने आतमा की बात घणी प्यारी लागे

(तर्जजनम जनम का साथ हे)

सम्मेतशिखर का नाथ है, हमारा तुम्हारा(२)
इस तीरथ में जो भी आये मिले न जनम दुबारा

आँख से अमीरस छलके, मस्तक नाग सुहाये
ऐसी सुन्दर मुरत भक्तों के मन भाये
मन की ईच्छा पूरी होये, आये द्वार तिहारा
सम्मेतशिखर का नाथ है, हमारा तुम्हारा'(२)

मुक्ति से भक्ति प्यारी, कहते ज्ञानी ध्यानी
इनके चरण कमल में बीते यह जिंदगानी
सच्चे दिल से ध्यान लगादो होवे वारा न्यारा ...
सम्मेतशिखर का नाथ है, हमारा तुम्हारा'(२)

इस तीरथ के कंकर पत्थर हम बन जाये
भक्तों हम पे चलकर दर्शन तेरा पाये
अंतिम इच्छा पूरी होवे, जीवन हो सुखकारा ...
सम्मेतशिखर का नाथ है, हमारा तुम्हारा'(२)

साँवलिया ये पारस, लीला अजब दिखाता
इस के चरण में जो भी आये, बेडा पार लगाता
राय और रंक को भी तारे जग का तारणहारा ...
सम्मेतशिखर का नाथ है, हमारा तुम्हारा'(२)

સ્તુતિ

ક્યારે પ્રભુ ! તુજ સ્મરણ થી આંખો થાકી અશ્રુ સરે?
ક્યારે પ્રભુ! તુજ નામ વદતાં, વાણી મુજ ગદગદ બને?
ક્યારે પ્રભુ ! તુજ નામ શ્રવણે, દેહ રોમાંચિત બને?
ક્યારે પ્રભુ ! મુજ ધાસે ધાસે નામ તારું સાંભરે ?

જ્યારે સતાવે ક્રોધ મુજને, ક્ષમા બની પધારજો
જ્યારે ડરાવે લોભ મુજને, સંતોષથી સમજાવજો
જ્યારે ડગાવે માન મુજને, નમ્રતાથી નમાવજો
હે નાથ ! શંખેશ્વર સેવક ની વિનંતી અવધારજો

હે ત્રણ ભુવન ના નાથ ! મારી કથની જઈ કોને કહું?
કાગળ લખ્યો પહેલે નહિ, ફરિયાદ જઈ કોને કરું?
તું મોક્ષ ની મોજાર માં, હું દુખભર્યા સંસાર માં
જરા સામું પણ જુઓ નહિ તો ક્યાં જઈ કોને કહું ?

સુસ્થા હશે પૂજ્યા હશે, નીરખ્યા હશે પણ કો ક્ષણે
હે જગતબંધુ ! ચિત્તમાં ધાર્યા નહિ ભક્તિ પણે
જન્મ્યો પ્રભુ તે કારણે , દુખ પાત્ર હું સંસાર માં
હા ભક્તિ મુજ ફળતી નથી , જે ભાવ શુન્યા ચાર માં

ભવોભવ તમારા ચરણ પામી , શરણ માં બેસી રહું
ભવોભવ તમારી આણ પામી, કર્મ નો કાંટો દહું
ભવોભવ તમારો સાથ મળજો , એક છે મુજ પ્રાર્થના
ભવોભવ તમારું પામું શાસન, એક એ અભ્યર્થના

વાણી તમારા ગીત ગાતાં, આજ મનભાવન બની
આંખો તમારું રૂપ જોતા , આજ અતિ પાવન બની
અંગો તમોને નમન કરતા, આજ પામ્યા સફળતા
મન સ્થિર બન્યું તુજ ધ્યાન થી, આજે તજી ને ચપલતા

ક્યારે પ્રભુ ! નિજ દ્વાર ઉભો, બાળ ને નિહાળશો ?
નિતનિત માંગે ભીખ ગુણ ની, એક ગુણ ક્યારે આપશો ?
શ્રદ્ધા દીપક ની જ્યોત આંખી, જવલંત ક્યારે બનાવશો ?
સુના સુના મુજ જીવન ગૃહ માં, આપ ક્યારે પધારશો?

તારા માં પ્રભુ એવું શું? દોડી દોડી આવ્યો હું
મુજને એ ના સમજાતું : હૈયું શાને હરખાતું

તારા દર્શન જ્યાં પામું મનડું મારું મલકાતું
તારા રૂપ માં એવું શું? દોડી દોડી આવ્યો હું.....

નીંદર મુજને ના આવે, ભોજન મુજને ના ભાવે
તુજને જો હું ભેટું ના, શાંતિ મુજને ના થાયે
તારી ભક્તિ માં એવું શું? દોડી દોડી આવ્યો હું.....

મારી સઘળી ચિંતાઓ, ઘેરા દુખ ની ઘટનાઓ
તારા વેણે વિસરાતી વળગેલી સૌ વિપદાઓ
તારી વાણી માં એવું શું? દોડી દોડી આવ્યો હું.....

ત્રણ લોકનો નાથ તું, ત્રણ ભુવન નો નાયક તું
મુક્તિ માર્ગ નો દાતાર તું, મુજ જીવન નો આધાર તું
તારા તત્વ માં એવું શું? દોડી દોડી આવ્યો હું.....

પ્રભુ જેવો ગણો તેવો, તથાપિ બાળ તારો છુ
તને મારા જેવા લાખો પરંતુ એક મારે તું

નથી શક્તિ નીરખવાની, નથી શક્તિ પરખવાની
નથી તુજ ધ્યાન ની લગની, તથાપિ બાળ તારો છુ ,

નથી તપ જપ મેં કીધા, નથી મેં દાન તો દીધા
અધમ રસ્તા સદા લીધા, તથાપિ બાળ તારો છુ

અરિહંત દેવ હો પ્યારા ગુના કર માફ સૌ મારા
ભૂલ્યો ઉપકાર હું તારા, તથાપિ બાળ તારો છુ

દયા કર દુખ ભવ કાપી, "અભય" ને શાંતિ પદ આપી
પ્રભુ હું છું પૂરો પાપી, તથાપિ બાળ તારો છુ

દયા કર હું મુંઝાઉં છું, સદા હૈયે રીબાઉં છું
પ્રભુ હું ધ્યાન ધ્યાવું છું, તથાપિ બાળ તારો છુ

(રાગ.....આ લૌટકે આજ મેરે મીત)

તું બોલ પ્રભુ એક વાર, કે મારું હૈયું પોકારે છે
નથી એન મને ઘડી વાર(2) કે મારું હૈયું પોકારે છે

પતિત પાવન, શરણાગત વત્સલ, બિરુદ તું એવું ધરાવે
આશા છે મારી બાળ કહીને, કેમ ના મુજને બોલાવે
તને કહું છું હું પરિવાર, (2) કે મારું હૈયું પોકારે છે ..તું બોલ ...

સુર સરિતા જેમ ઝંખે સરોવર, માન સરોવર ને હંસો
સુરજ વિણ જેમ પદ્મ ના ખીલે તેમ, તુમ વિણ ના સુખ અંશો
મારી આંખે છે આંસુડા ની ધાર(2) કે મારું હૈયું પોકારે છે ..તું બોલ ...

પાપી જીવો ને તેં તો ઉગાર્યા, સાંભળીને હું તો આવ્યો
માન મુકીને તુજ ચરણોમાં, ભક્તિ ની ભેટ હું લાવ્યો
તું શાને કરે હજુ વાર (2) કે મારું હૈયું પોકારે છે ..તું બોલ ...

વિષય કષાય ને કામ ક્રોધ રૂપી અંતર વૈરી સતાવે
તુજ શરણાગત થઇ ને રહ્યો તોય મુજને જો તું ના બચાવે
તો ક્યાં કરવો પોકાર(2) કે મારું હૈયું પોકારે છે ..તું બોલ ...

આત્મ કમળ ની લબ્ધી ખીલવવા, વિક્રમ કરી ને પધારો
અજીતવીર્ય કહે ભાગ્ય તિલક કરી, યશ તમારો વધારો
મારો એક જ તું આધાર(2) કે મારું હૈયું પોકારે છે ..તું બોલ ...

તને રાત દિવસ હું યાદ કરું, શંખેશ્વર પારસનાથ પ્રભુ
તને રાત દિવસ હું યાદ કરું, મારા સ્વામી સીમંધર નાથ પ્રભુ
તારા દર્શન ની હું આશ કરું, મારા દિલ ની તને શું વાત કરું ?

અંતર્યામી , જગ વિસરામી , સહુ જીવનો પ્રભુ તું હિતકામી
કળિકાળ નો છે તું કલ્પતરુ , વીતરાગ પ્રભુ છે વિઘ્નહરું
તને રાત દિવસ હું યાદ કરું, શંખેશ્વર પારસનાથ પ્રભુ

મોહે ઘેર્યા લોચન મારા , કીધા નહિ મેં દર્શન તારા
એથી દુખ ભર્યું જીવન મળિયું, બહુ પાપ કરમ મુજને નડીયું
તને રાત દિવસ હું યાદ કરું, શંખેશ્વર પારસનાથ પ્રભુ

ઓ દીનબંધુ, કરુણા સાગર, શરણાગત ના સ્નેહ સુધાકર
સ્વામી ભક્ત બની નમતો તુજને, દુખ મુક્ત તુરત કરજો અમને
તને રાત દિવસ હું યાદ કરું, શંખેશ્વર પારસનાથ પ્રભુ

(રાગ હમ તુમ ચોરી સે)

લગની લાગી છે, કે અગ્નિ જાગી છે , તારા મિલન ની પ્રભુ !
પળેપળ અંખ્યા કરું તને, કે લગની લાગી છે

ઘેલું લાગ્યું મુજને, હું ક્યારે તુજને ભેટું ?
તારા પાવન ખોળે , મીઠી નીંદર માં લેટું ?
શમણાં માં રોજ હું, રોજ હું નીરખ્યા કરું તને
કે લગની લાગી છે

હળવા હળવા હાલે , આ હૈયા ના ધબકારા ,
ઘડીએ ઘડીએ દિલમાં વાગે તારા ભણકારા
અંતર ના ગોખ માં, ગોખ માં કલખ્યા કરું તને
કે લગની લાગી છે

જાય ભલે જન્મારો , પણ ધીરજ હું ના હાડું
મરવાની વેળાએ પણ તારું નામ પુકારું
જીવું હું જ્યાં સુધી, ત્યાં સુધી સમર્યા કરું તને
કે લગની લાગી છે

(રાગ ... ખેલ ખેલ રે ભવાની મા)

તાળી પાડી ને તમે બોલજો ... જય જય પારસનાથ
દાદા ના દરબારે બોલજો જય જય પારસનાથ

કળિકાળનો કલ્પતરુ છે, તારો મહિમા ભારી
તારા શરણે આવે છે આ લાખો નર ને નારી
તાળી પાડી ને તમે બોલજો ... જય જય પારસનાથ

તારી મારી પ્રીત પુરાણી , જનમ જનમ નો નાતો
આજે તો કરવી છે મારે હૈયા કેરી વાતો
તાળી પાડી ને તમે બોલજો ... જય જય પારસનાથ

તું છે મારો, હું છું તારો, એવો મારો દાવો
ભક્તિ કરતા મુક્તિ પામું હૈયા માં છે ભાવો
તાળી પાડી ને તમે બોલજો ... જય જય પારસનાથ

ઊંચા અંબર થી આવો ને પ્રભુજી, દર્શન કરવાને તલસે આંખડી
મન ના મંદિરીયે આવોને પ્રભુજી, રાહ જોઈ મેં પ્રભુ આપની

સુરજ ને ચાંદ ના મેં દીવા પ્રગટાવ્યા, ટમટમતા તારલાને માર્ગે બિછાવ્યા
ઉભો અધીર હું તો જોવું વાટલડી, દર્શન કરવાને તલસે આંખડી
ઊંચા અંબર થી આવો ને પ્રભુજી, દર્શન કરવાને તલસે આંખડી

આવોને નયનો માંથી અમીરસ વરસાવજો, કાપો ને કર્મો મારા ભક્તિ સ્વીકારજો
મુખલડું જોવા હું તો થયો ઉતાવળો, દર્શન કરવાને તલસે આંખડી
ઊંચા અંબર થી આવો ને પ્રભુજી, દર્શન કરવાને તલસે આંખડી

ભક્તિ ને ભાવ થી નમન કરતા, મસ્તક અમારું તારા ચરણો માં ધરતા
આતુર તુમ સંગે કરવા વાટલડી, દર્શન કરવાને તલસે આંખડી
ઊંચા અંબર થી આવો ને પ્રભુજી, દર્શન કરવાને તલસે આંખડી

દર્શન દેજો નાથ દર્શન દેજો નાથ
ભક્તો તમારા તમને પોકારે દર્શન દેજો નાથ

અંતર ની તમે આશા પૂરજો, દુખડા સહુના હરજો
દિન દયાળુ દાદા મારા, રક્ષા સહુની કરજો
ભૂલું ના તને નાથ, છુટે ના તારો સાથ
ભક્તો તમારા તમને પોકારે દર્શન દેજો નાથ

પ્રભુ તમારા ચરણો માં હું માંગુ તમારી સેવા
શંખેશ્વર ના પાર્શ્વ પ્રભુજી, ઓ દેવાધિદેવા
લઈએ તમારું નામ, ધરીયે તારું ધ્યાન
ભક્તો તમારા તમને પોકારે દર્શન દેજો નાથ

અમી ભરેલી આંખડી તારી, વરસે અમૃત ધારા
કૃપાનિધિ કરુણા સાગર, જગના પાલનહારા
દેજો મોક્ષ નું ધામ, હૈયે પૂરજો હામ
ભક્તો તમારા તમને પોકારે દર્શન દેજો નાથ

(રાગમેરા જૂતા હૈ જાપાની)

હું તો આવ્યો તારે દ્વાર, મારો કરજો બેડો પાર
મને તારી લ્યો વીતરાગ, મને તારી લ્યો વીતરાગ

ચાર ગતિ રખડી રહ્યો છું, ક્યાંય મળે ના કિનારો (2)
મોહ માયા માં ડૂબી રહ્યો છું, હાથ ઝાલો પ્રભુ મારો (2)
મેં તો અલ્યો તારો હાથ, મને ઉગારો ને નાથ
મને તારી લ્યો વીતરાગ, મને તારી લ્યો વીતરાગ

ભવસાગર ના ખરા પાણી, પીધા છે મેં તો જાણી (2)
જન્મ મરણ ના ફેરા માંથી, આપોને સમાધિ (2)
દયા સાગર ના ભંડાર, કરુણા નિધિ ના સાગર
મને તારી લ્યો વીતરાગ, મને તારી લ્યો વીતરાગ

ઉપર નીચે, નીચે ઉપર, શોધું મારા નાથને (2)
ઠામ ઠેકાણું હું નહિ જાણું, ક્યાં જઈ પોકારું મારા નાથને (2)
હું તો શોધું દિનરાત, મારી પૂરી કરજો આશ
મને તારી લ્યો વીતરાગ, મને તારી લ્યો વીતરાગ

(રાગ.....જાદુગર સૈયા)

તપસ્વી બેની, રજા લઉં તમારી,
અમને થઈ ઘણી વાર, હવે ઘેર જાવા દો
તપ ગીત ગાયા, મન મલકાયા,
આવશું ફરી કોઈ વાર, હવે ઘેર જાવા દો

કુટુંબી તેડાવ્યા, સાંજ ગવડાવી,
સ્વામીવાત્સલ્ય રૂડા થાય, હવે ઘેર જાવા દો
પ્રભાવના કીધી, ભક્તિ કરી લીધી,
લીધો અનેરો તમે લાભ , હવે ઘેર જાવા દો

તપસ્વી બેની શાતા માં રહેશો,
બોલાવજો ફરી કોઈ વાર, હવે ઘેર જાવા દો
પાર્શ્વ મંડળ આવે, આશીર્વાદ આપે,
તપ કરજો આવતી સાલ, હવે ઘેર જાવા દો

ગીતો ગાયા, સૌ હરખાયા,
હવે અમને આપો વિદાય, હવે ઘેર જાવા દો

ઉપકાર કર્યા મુજ પર, એના ગુણ હું વિચારું છું
કેવો બદલો મેં વાળ્યો, હું એજ વિચારું છું

પરમાત્મા ઉપકારી, મને મંઝિલ દર્શાવી
મારા દુર્ગુણ ના દેખ્યા, બસ કરુણા વરસાવી
એને હૈયે ધરવામાં, હું હીણપત માનું છું
કેવો બદલો મેં વાળ્યો, હું એજ વિચારું છું

સંતો એ સમજાવ્યા ઈશ્વર ના આદેશો
ઉપકાર કરે એવા મને આપ્યા ઉપદેશો
એના મોંઘા વચનોની, હું હાંસી ઉડાવું છું
કેવો બદલો મેં વાળ્યો, હું એજ વિચારું છું

મને વિદ્યા દેનારા ગુરુને મેં શું આપ્યું
દક્ષિણા દેવાનું મેં યાદ નથી રાખ્યું
કદી ભેટો થઈ જાતાં, હું મોં સંતાડું છું
કેવો બદલો મેં વાળ્યો, હું એજ વિચારું છું

માં બાપ મને ખુંચે, જેણે જન્મ દીધો મુજને
મારા પાલન પોષણ માં ઘણો ભોગ દીધો જેણે
એની વૃદ્ધાવસ્થા માં, મારું ઘર છોડાવું છું
કેવો બદલો મેં વાળ્યો, હું એજ વિચારું છું

"वीतराग स्तोत्रम्"

शिवं शृङ्खलुद्धं, परं विश्वनाथं, न देवो न बन्धुर्न कर्ता न कर्म
न अंगं न सङ्गं, न स्वेच्छा न कायम, विद्वानन्दरूपं नमो वीतरागं
न बन्धो न प्रोक्तो न रागदिलोभं, न रोगं न भोगं न व्याधिर्न शोकम्
न क्रोधं न मानं न माया न लोभम्, विद्वानन्दरूपं नमो वीतरागं
न हस्तौ न पादौ न घ्राणं न जिह्वा, न चक्षुर्न कर्णं न नयत्रं न निद्रा
न स्वामी न भृत्यं न वेद्यो न मर्त्यः, विद्वानन्दरूपं नमो वीतरागं
न जन्म मृत्युः न मोहो न चिन्ता, न क्षुब्धो न भीतो न कार्यं न तन्द्रा
न स्वेदं न खेदं न वर्णं न भुजा, विद्वानन्दरूपं नमो वीतरागं
त्रिदण्डे त्रिदण्डे हरे विश्वनाथं, ऋषिकेश, विध्वंस्त कर्मादि जालम्
न पुण्यं न पापं न चाक्षादि पादम्, विद्वानन्दरूपं नमो वीतरागं
न बालो न वृद्धो न तुच्छो न मूढो, न खेदं न भेदं न मूर्तिर्न स्वेदः
न कृष्णं न शुक्लम् न मोहं न तन्द्रा, विद्वानन्दरूपं नमो वीतरागं
न आद्यं न मध्यं न अन्तं न चान्यत्, न द्रव्यं न क्षेत्रं न कालो न भावः
न शिष्यो गुरुर्नापि न हीनं न दीनम्, विद्वानन्दरूपं नमो वीतरागं
ज्ञान स्वरूपं स्वयं तत्त्ववेदी, न पूर्णं न शून्यं न चैत्यं स्वरूपी
न चान्योन्य भिन्नं न परमार्थ भेकम्, विद्वानन्दरूपं नमो वीतरागं

!